हिन्दी साहित्य पर बौध धर्म–दर्शन और विज्ञान का प्रभाव

राजपाल

प्राध्यापक हिन्दी

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फकीरवाली, पदमपुर श्रीगंगानगर

प्रस्तावनाः हमारी इस सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण जड़ और चेतन के मिलन से ही संभव हो पाया है। अर्थात् इस सृष्टि में तरह–तरह के जड़ पदार्थ या संजीव जीव–जन्तु और प्राणी पाये जाते हैं। परंतु आरम्भिक काल से लेकर वर्तमान काल में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो आदिमानव से चलता हुआ वर्तमान मानव (सुशिक्षित व सर्वांगीण क्षेत्र में सफलताएं प्राप्त करता हुआ) तक पहुंचा हैं। और विकास के इस क्रम में मानव का साहित्य धर्म, दर्शन और विज्ञान पर क्रमशः प्रभाव पड़ा हैं और आगे भी पड़ता रहेगा।

हमारे भारतीयो में प्रमुख रूप से क्रमश कृष्ण, राम और महात्मा बुद्ध इन तीन महापुरूष के जीवन–चरित एवं इनमें सबंधित पात्रों को आधार बनाकर लिखे ग्रन्थ स्बोधिकरूपति प्राप्त हुए हैं। कृष्ण और राम की तुलना में महात्मा बुद्ध व इनमें सबंधित पात्रों, स्थानों को आधार बनाकर लिखे ग्रन्थ अपेक्षाकृत कम है जब कोई धर्म अपनी विशिष्ट विशेषताओं से निकलकर (कामन) (श्री मद्भागवत गीता) बौध धर्म (मानवतावादी), धर्म से दर्शन से विज्ञान का मिश्रित परिपूर्ण रूप बनकर वैश्विक जन का कल्याण करने की और अग्रसित होता है।

हिन्दी साहित्य की विधिवत शुरूआत 19 वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में हुई और यही समय भारत में बौध धर्म की पुर्नजागरण काल का भी हैं। इस समय बौध धर्म के तीर्थ स्थलों, समारकों व पाली एवं संस्कृत बौध साहित्य का पुनरूधार हुआ। भारत में भी बौध धर्म के इस पुर्नजागरण का श्रेय कुछ हद तक पाश्चात्य जगत को भी जाता है जिसने इसमें रूचि ली और बौध धर्म से सम्बन्धित स्थलों का भी परिष्कार किया बौध धर्म के इस पुर्नजागरण ने हिन्दी जनमानस को भी प्रभावित किया। ईश्वर वाद और आत्मवाद के अनीच्छुक इस धर्म दर्शन के समन्वय वादी रूप ने आधुनिक हिन्दी साहित्य को नई सफुरिती और चेतना दी। बौध धर्म की तुलना में बौध दर्शन से कुछ हद तक साम्यता रखने वाले औपनिषदिक दर्शन के अधिक निकट थी।

बौध साहित्य दर्शन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, छाया वाद काल, द्विवेदी, प्रगृति वाद, प्रयोगवाद, नकेन वाद और आधुनिक काल के वर्तमान में क्रमशः बौध धर्म दर्शनव विज्ञान पर साहित्य लिखा जा रहा है।

धर्म का अर्थः सामान्य धर्म दर्शन के स्वरूप और क्षेत्र के विषय में आम व्यक्ति हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौध धर्म की और अपना मत प्रकट करता है, आम व्यक्ति का मन्दिर,मस्जिद गिरजाघर आदि उपासना स्थलों में जाने की ही धर्म मानता है। परन्तु यह ब्राह्य रूप से सत्य है। यही बाहरी भिन्नता को हम दूसरो में (कॉमन रूप से) धर्म कहते ह।

दर्शन का सामान्य अथः दर्शन अंग्रेजी भाषा के 'फिलोस्फी' शब्द का रूपांतर है। इस शब्द की उत्पति ग्रीक के दो शब्दों 'फिलोस' तथा 'सोफिया' से हुई है। 'फिलोस' का अर्थ है प्रेम अथवा अनुराग और 'सोफिया' का अर्थ है ज्ञान इस प्रकार 'फिलोस्फी' अर्थात दर्शन का शब्दिक अर्थ का ज्ञान अनुराग अथवा ज्ञान का प्रेम है। इस दृष्टि से ज्ञान तथा सत्य को खोज करना तथा उसके वास्तविक स्वरूप को समझने की कला को दर्शन कहते ह तथा किसी कार्य को करने से पूर्व इस कला को प्रयोग करने वाले व्यक्ति को दार्शनिक की संज्ञा दी जाती है। प्लेटो

ने अपनी पुस्तक रिपब्लिक में लिखा है–''जो व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करने तथा नई–नई बातों को जानने के लिए रूचि प्रकट करता है तथा जो कभी संतुष्ट नहीं होता उसे दाशनिक कहा जाता है।''

दर्शन का विशिष्ट अर्थ : विशिष्ट तथा अधिक प्रत्यक्ष रूप में दर्शन का अर्थ अमूर्त चिन्तन करने के उस प्रयास से है जिसके द्वारा आत्मा, ईश्वर, प्रकृति तथा सम्पूर्ण जीवन का रहस्योद्घाटन किया जाता है। इस दृष्टि से मनुष्य क्या है? जीवन क्या है?

वास्तविक जीवन का उद्देश्य क्या है? इस संसार की प्रकृति क्या है? सूर्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्र आदि का उद्गम स्थान कौन सा है? व्यक्ति इस संसार में क्यों आया है? ईश्वर का स्वरूप क्या है? मृत्यु क्या है? क्या मानव जीवन तथा प्रकृति से परे कोई और लोक है? तथा उसका मृत्यु के पश्चात् कोई और जन्म होगा? इस प्रकार की बातों की खोज करके उस चिरन्तन सत्य का उद्घाटन करना दर्शन का मुख्य विषय है। दूसरे शब्दों में, उक्त प्रश्नों के अध्ययन को ही दर्शन कहते ह, चूंकि ये सभी बातें अत्यंत गूढ़ है।

इसलिए इनके विषय में चिन्तन तथा मनन करना एवं सत्य के वास्तविक स्वरूप को समझना साधारण अथवा सामान्य बुद्धि वाले व्यक्तियों की सामर्थ्य से परे की बात है। यह कार्य महान् व्यक्तियों का है। हैंडरसन तथा उसके साथियों ने दर्शन का विशिष्ट रूप में अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है ''दर्शन ऐसी सबसे जटिल समस्याओं का कठिन, अनुशसित तथा सावधानी के साथ किया हुआ विश्लेषण है जिनका मानव ने कभी अनुभव किया हो।

दर्शन तथा विज्ञानः दर्शन की दूसरी विशेषता यह है कि इसका विज्ञान से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। विज्ञान हमें वास्तविकता से परिचित कराता है। अतः विभिन्न विज्ञानों द्वारा प्रस्तुत की हुई वास्तविकतायें, जिनका सम्बन्ध बालक की प्रकृति तथा वातावरण से ह, दर्शन की अपरिपक्व सामग्री है। यदि जीवन की वास्तविकताओं का ज्ञान नहीं होगा तो दर्शन के लिए सत्य की खोज करना कठिन हो जायेगा। इस दृष्टि से प्रत्येक शिक्षक को विज्ञान तथा दर्शन दोनों का अध्ययन करना परम आवश्यक है। इस सम्बन्ध में यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि विज्ञान द्वारा प्रस्तुत की हुई वास्तविकताओं तथा स्वीकृत बातें जिनसे अन्य बातों का अनुमान किया जा सकता है, केवल आधार है तथा दर्शन के द्वारा निर्धारित किये हुए मूल्य एवं आदर्श शिक्षा के लक्ष्य है।

दर्शन की उपर्युक्त विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए इस निष्कर्ष पर आते है कि सत्य तथा वातावरण मे घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। हम जिस प्रकार के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक वातावरण में रहेंगे उसी के अनुसार हम सत्य के रूप को स्वीकार करते रहेगें तथा अन्य व्यक्तिओं को अपने विचारों और विश्वासों से प्रभावित करने के लिए भिन्न–भिन्न रीतियों का सहारा लेते रहेंगे। यही है शिक्षा की पृष्ठ भूमि।

धर्म दर्शन और विज्ञानः विज्ञान अध्यात्म की सीमाएं प्रथक है परंतु दोनो की मूलभूत अवधारणाओं में सामजस्य स्थापित किया जा सकता है। यदि दोनो अपने अपने आग्रह छोड़ दे तो दोनो के बीच सामंजस्य के सूत्र स्थापित किये जा सकते ह। अध्यात्म एवं विज्ञान के बीच सामजस्य का मार्ग स्थापित करने के लिए परम्परागत धर्म की इस मान्यता को छोड़ना पड़ेगा कि यह संसार ईश्वर की इच्छा की परिणीति है दूसरी और विज्ञान को भी अपनो भौतिक वादी सीमाओं का अतिक्रमण करना होगा। विश्व के मूल में पदाथ एवं शक्ति को ही अधिष्ठित देखता आया है। विज्ञान को अपार्थिव चिन्मय सता का भी संस्पर्श करना होगा। भविष्य के विज्ञान को यह आग्रह भी छोड़ना होगा कि जड़ पदार्थ से चेतना का आर्भिभाव होता है। चेतना को अध्ययन अध्यात्म का विषय है। जीव चेतन है अजीव अचेतन है जीव का भाव चेतन्य है अजीव का स्वभाव जड़त्व अचेतनय है। जो जानता है वह जीव

आत्मा है और जो नही जानता है वह अनात्मा है। जीव आत्मा सहित है। अजीव में आत्मा नही है जीव सुख दुख की अनुभुति करता है। अजीव को सुख दुख अनुभुति नही होती, जो जानता है वह चेतना है जो नही जानता वह अचेतना है। स्मृति एवं बुद्धि तथा मस्तिष्क के समस्त व्यापार चेतना नही है। पदार्थ के रूपातंर से स्मृति एवं बुद्धि के गुणों को उत्पन्न किया जा सकता है मगर चेतना उत्पन्न नही की जा सकती है। एक के अनुसार ही परम चेतन्य से ही जड़ जगत की सृष्टि होती है। दूसरे के अनुसार भौतिक द्रव्य की सता है। भौतिक पदार्थ के अतिरिक्त अन्य किसी की सता नही है बुद्धि एवं मन की भांति चेतना भी विभिन्न तत्रिकाओं का तंत्र है जो अनन्त अणुओं एवं आणविक क्रियाशीलता का परिणाम है। भविष्योन्मुखो दृष्टि है कि दोनो की भिन्न सता है। जिस वस्तु का जैसा उपादान कारण होता है वह उसी रूप में परिणित होता है चेतन के उपादान अचेतन में नहीं बदल सकत, अचेतन के उपादान चेतन में नही बदल सकते, न ऐसा कभी हुआ हैं और न ऐसा हो रहा हैं और न ऐसा होगा कि जीव अजीव बन जाये और अजीव जीव बन जाय। आत्मा अमृत तत्व है इन्द्रियों का वह विषय नही है इससे इन्द्रियों की सीमा सिद्ध होती है। इससे आत्मा का अस्तित्व नहीं है यह सिद्ध नही होता, जड़ पदार्थ का रूपांतरण उर्जा, स्मृति, कृत्रिम प्रज्ञा एवं बुद्धि में संभव है। किन्तु इनमें चेतन्य नही होता, कम्प्यूटर चेतना युक्त नही है। कम्प्यूटर को यह चेतना नही होती है कि वह यह कार्य कर रहा है। कम्प्यूटर मनुष्य की चेतना से प्रेरित होकर कार्य करता है। उसे सुख दुख की अनुभुति नही होती है। उसे संवेदन नही होता। मैं हुँ, मैं सुखी हुँ, मैं दुखी हुँ। शरीर को इस प्रकार के अनुभवो की प्रतीति नही होती इस प्रकार के अनुभवो की जिसे प्रतीति होती हैं वह शरीर से भिन्न है। आत्मा में चेतन्य नामक विशेष गुण है। आत्मा में जानने की शक्ति है। आत्मा के द्वारा अपने जीव को अस्तिव होता है ज्ञान का मूल स्त्रोत आत्मा ही है। विज्ञान एवं आध्यात्म के बीच सामंजस्य का मार्ग स्थापित करने में मनोविज्ञान का अध्ययन भी सहायक हो सकता है। मनोविज्ञान में संज्ञानात्मक मनोविज्ञान पर कार्य हो रहा है। पहले मनोविज्ञान उतेजन प्रक्रिया व्यवहार के आधार पर ही मानवीय व्यवहार का अध्ययन करता था। आज का मनोविज्ञान उदीपनों और प्रक्रियाओं के आधार पर मानवीय व्यवहार अध्ययन करने तक सीमित नही है अब मनोविज्ञान मानवीय विज्ञान को समझने के लिए प्रत्यक्षण, स्मृति, तर्क, निर्णय अनुभव बुद्धि आदि का भी उपयोग कर रहा है। विज्ञान को इस अवधारणा का अतिक्रमण करना होगा की भौतिक विज्ञान के नियमों से सम्पूर्ण वास्तविकता संभव है। इस दिशा में सन् 1936 में गोदेल द्वारा प्रतिपादित प्रमेय का महत्व है। उनके द्वारा सिद्ध किया गया कि गणित की बहुत सी वास्तविकताओं को सिद्ध नही किया जा सकता। आलोक में विज्ञान इस सिद्धान्त की पुष्टि की और कदम बढ़ा रहा है कि प्रत्येक प्राणी की चेतना को प्रकट करने क लिए जैविक चेतना संहीति तो केवल भौतिक ढ़ाचा जुटाता है।

धर्म विज्ञान और दर्शन का समन्वयः दर्शन का प्रमुख लक्ष्य है परम सत्य का ज्ञान प्राप्त करना, धर्म का उदेश्य है आध्यात्मिक मूल्यों को भावनात्मक ढ़ग से स्वीकार करना अर्थात् यह कहा जा सकता है कि दर्शन विचारात्मक है, जबकि धर्म व्यवाहरिक है दर्शन संदेह, तर्क, प्रमाण की समस्त उपादानों के सहारे सत्य को तोलता है जबकि धर्म आस्था, श्रद्धा, विश्वास तथा भक्ति द्वारा हृदय को स्नेह से अभिसंचित करना चाहता है। धर्म तर्क से परे जाना चाहता है जबकि दर्शन में तर्क की पूरी गुजाइश रहती है अर्थात धर्म भावना से परिपुष्ठ होता है तो दर्शन विचारों से यह दोनो वस्तुतः एक–दूसरे के पूरक है। दर्शन को धर्म की आवश्यकता इसलिए है कि वैचारिक उड़ान जीवन का अंग नहीं बन जाती तब तक वह उपयोगी नहीं हो सकती। मानव बुद्धि सीमित हाते हूए भी उस विराट को विराटत्व बता सकने में सक्षम है। विराटता का प्रतिपादन भी बुद्धि विराट का अनुभव करती है। वह उस अनन्त सता से सम्पर्क जोड़ती है। दर्शन की विचारो की उपयोगिता यहां मात्र इतनी है कि कही भावनाएं तुछ को ही

महान् विराट तो नही समझ बैठी है। पक्षी अनन्त आकाश में उड़त है और उक्त अनुभुति उन्हे उड़ने के पश्चात् ही होती है। बिना प्रयास किये अनन्त मान लेने वाली अनुभुति नही भावुकता होगी। दर्शन धर्म को मांजता, संवारता तथा उसमें उड़ रहें झाड़ झंकाड़ को काटता और छांटता भी है। धर्म के सिद्धान्तो मान्याताओं में पूरे विश्व में विस्मताएं दिखाई पड़ती ह। वही विज्ञान के सिद्धान्त में सार्वभौमिकता देखने को मिलती है। वज्ञानिक चाहे एशिया के हो या यूरोप के हो, सबके विचारो में एकरूपता है। फॉमूले एक है, भाषा सिद्धान्त एक है, उनमें आपसी सहयोग भी है। यह कारण है की विज्ञान का इतना विकास संभव हो सका। जबकि चारो धर्मो में विस्मताएं दिखाई पड़ती है। धर्म को अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है तो उसे अपना स्वरूप ऐसा रखना होगा जो तर्क संगत प्रमाणिक एवं उपयोगी हो यह तथ्य धर्म की मूल सता आरम्भ से मौजूद है। दुराग्रहों ने उन्हें कुंठित किया था। तथ्य और सत्य को जानना विज्ञान और दर्शन का उदेश्य रहा है अर्थात वे फले फुले और विश्व घर में अपनी एकरूपता बनाये रखें। धर्म को भी प्रगतिशील होना ही होगा और इसके लिए एक ही उपाय है विज्ञान और दर्शन के सहारे अपने शाश्वत और उपयोगी स्वरूप का अभिनव प्रस्तुति करण करना अतः उक्त तीनों का समुचित समन्वय संभव हो सकेगा।

निष्कर्षः हम यह कह सकते है कि हिन्दी साहित्य पर विविध धर्मों, दर्शनो और विज्ञान का प्रभाव निरन्तर पड़ता रहा हैं, और आगे भी क्रमशः पड़ता रहेंगा। साहित्य में धर्म यदि मनुष्य की आत्मिक सीढ़ी, विज्ञान तीसरी सीढ़ी है। परन्तु तीनों एक–दूसरे के पूरक (मिश्रण) धर्म के बिना दर्शन अधूरा है और धर्म और दर्शन के बिना विज्ञान अर्थात् मनुष्य अपनी अज्ञानता/अपूर्णता को कभी ज्ञान/विज्ञान से पूर्णता की और अग्रिस्त होता है तो कभी दर्शन से, तो कभी धर्म से अर्थात मनुष्य क लिए उक्त तीनों ही अनिवार्य है। इन तीना के आपसी समन्वय से ही हम आदिमानव से मानव और मानव से श्रेष्ठ मानव अर्थात् मानवता वादी दर्शन की और क्रमशः अगिस्त हो रहे है।

संदर्भ सूचीः

1. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास एनसीईआरटी दिल्ली संस्करण 1986
2. स्कंध गुप्त–राजकमल, दिल्ली 1994
3. भारतीय साहित्य के निर्माताः साहित्य अकादमी दिल्ली 1984
4. आलोचना पत्रिका जनवरी मार्च 2008 राजकमल, दिल्ली
5. बौध धर्म के 2500 वर्ष प्रकाशन विभाग दिल्ली 2008
6. हिन्दी साहित्य कोष ज्ञान मण्डल वारानसी, संस्करण 1960
7. यशोधरा डॉ॰ रमाकान्त पाठक, मोतीलाल बनारसी दास, अशोक राजपथ पटना प्रथम संस्करण 1981
8. विज्ञान दर्शन अवलोकनः दार्शनिक रवि
9. ब्रहमा सूत्रः वैदान्त दर्शनः नन्दलाल दशोरा, रणधीर प्रकाशन हरिद्वार
10. दर्शन शास्त्रः सार संग्रह शिवकेश बैरवा, संपादकः आरके मिश्रा